पत्र-पुष्प

अर्हम्

मुनि वत्सराज

पूजा के पत्र - पुष्प परिपावन होते हैं
भक्ति भरे भावों से मन भावन होते हैं
जन-जीवन सरसित संजीवित करने को
श्रद्धामय शब्द-शिल्प सुख-सावन होते हैं

सद्‌गुण-सुरभित श्री गुलाब खंडेलवाल वास्तव में एक महान कवि हैं तथा एक महान भक्त भी । यह उनकी प्रशस्ति नहीं, अपनी अनुभूति है । महान कवि इसलिए कि आत्मानुभूति की महाविभूति उनके काव्य-कोश में है । महान भक्त इसलिए कि परमात्मा की श्रद्धा संभूति उनके हृदय-कोश में है इसका साक्ष्य है यह कृति 'पत्र-पुष्प' ।

'कवित्वं दुर्लभं लोके' , लोक में कवित्वं दुर्लभ है --- पर स्वतन्त्र, शाश्वत, सार्वजनीन एवं समृद्ध कवित्वं महादुर्लभ है । श्री गुलाब जी ने इन दुर्लभ तत्त्वों को अपने काव्यालोक से उजागर किया है । वे स्वतन्त्र कवि इसलिए हैं कि उन्होंने अन्य कवियों का न तो अनुसरण किया है न ही किसी से ईष्या-स्पर्धा । वे नई स्वतन्त्र शैली से चले हैं । वे सार्वकालिक हैं, क्योंकि 'स्वान्तः-सुखाय' के साथ जनजीवन-शोधन की प्रेरणा भी उनके कवित्व में प्रस्फुटित है । वे एक समृद्ध कवि हैं क्योंकि संख्या की दृष्टि से भी उनके गीत सहस्र के शिखर पर पहुँच गए हैं तथा गुणवत्ता से भी विशेष विभूषित हैं ।

कविवर का पिरोया हुआ यह पुष्पहार जन-जन का गलहार बने, इसी मंगल भावना के साथ,

मुनि वत्सराज
जैन तेरापंथ के संत
छोटीखाटू-राजस्थान

जैन तेरापंथ भवन
दिनांक२४-१०-२००३